

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

તોહફા એ રમજાન

પ્રકાશન નં. ૨૪

-:પ્રકાશક:-

ઈસ્લામિક ઇન્ફોર્મેશન સેન્ટર
હોટલ નુરાની પાસે, ડાંડા બજાર,
ભુજ-કચ્છ. મો. ૮૪૦૧૭ ૮૬૧૭૨,
www.iickutch.blogspot.in

अपनी पात

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इशमाया कि अल्लाह ने मुझे पेशकश की कि वो मेरे लिये मक्का की वादी को सोना बना दे. मैंने कहा नहीं, **ओ मेरे रब! जबकि मैं तो यह चाहता हूँ कि एक दिन सैर होकर पाऊँ और एक दिन लूपा रहूँ. लिहाजा जब मैं लूपा रहूँ तो तुजसे आशिर्वाह करुँ और तुजको याद करुँ और जब शिकमसेर रहूँ तो मैं तेरी हम्द करुँ और तेरा शुक्र करुँ.** (मिशक़ातुल मसान्नीह)

धंस हदीस से मालूम होता है कि हालत के अगैर कैफ़ियत पैदा नहीं होती. लूपा आदमी के अन्दर आशिर्वाह व धन्क़सारी (नम्रता) की कैफ़ियत उभारती है और उसको अल्लाह को याद करने वाला बनाती है. धंसके बाद आदमी को सैरी (भर पेट) हासिल होती है तो उसके शुक्र के ज़ख़ात को जगाती है और उसको हम्दे-भुदापन्दी में मशगूल कर देती है.

यही रोज़े का असल मक़सद है. हालांकी अब्द या बन्द होने की हेसियत से मोमिन को कोय धम्पितयार बाकी नहीं रहता कि वो अपने रब के इर्मान के नई और नुक़सान को मालूम करके उस पर अमल करे. बन्दे के अमल के लिये उसके रब का हुक़म होना ही काफ़ी है. फिर भी ग़ोरो-झि़क़ के लिये अगर हम देजें तो रोज़ा अक़ सालाना तर्बियती कोर्स है जिसके जरिये आदमी के उपर लूपा के हालात पैदा किये जाते हैं ताकी उसके अन्दर आशिर्वाह, धन्क़सारी और अल्लाह से दुआ व तोबा की कैफ़ियत उभरे. वह अल्लाह को याद करने वाला बन जाये.

रोज़े में दिन के पक़त आदमी को लूपा का तज़ुर्बा कराया जाता है, धंसके बाद रात को उसे धंस तज़ुर्बे से गुज़ारा जाता है कि वो भर पेट जाये और पीये ताकि उसके अन्दर शुक्र के ज़ख़ात बेदार हो और उसका सीना हम्दे-भुदापन्दी से भर जाये. आशिर्वाह (मोहताज़) व शुक्र दो ऐसी कैफ़ियतें हैं जो अल्लाह को मतलूब हैं.

रोज़े के लिये अरबी लइज़ सौम है. सौम के असल मअने है रूक़ना. शरीअत की ज़ुबान में साधंभ यानी रोज़ेदार वह धंसान है जो जाने-पीने व अजदवाज़ तअल्लुकात से पक़ती तौर पर रूक़ जाये. यह रूक़ना और परहेज़ करना आदमी के अन्दर बर्दाश्त की सलाहियत पैदा करता है. पुराने ज़माने में अरबी लोग अपने मुश्क़ल पक़त, सफ़्त व जंग के सइर के बेहतरीन साथी घोड़े को तर्बियत देने के लिये कुछ मुद्दत के लिये लूपा-प्यासा जडा रजते थे ताकी वह सफ़्ती को बर्दाश्त कर सके. धंसी तर्बियत याइता घोड़े को भीले-साधंभ (रोज़ेदार घोड़ा) कहते थे.

रोज़े के मक़ासिद में से अक़ यह भी है कि अक़ मोमिन पै दर पै तर्बियत से धंस काबिल हो जाये कि जब सफ़्तियाँ पेश आये तो वह उसके मुकाबले में पूरी तरह ज़म सके. रोज़ेदारी से असल झायदा यह भी है कि धंसान का माद्दी (भौतिक) पहलू कमजोर हो और उसकी रूहानियात बढ़े ताकि वह अपने रब के करीब हो सके.

अगर हम में रोज़े रजने के बावजूद भी धंस किस्म की तब्दीली नहीं आती है और अपनी जात में आशिर्वाह, धन्क़सारी, आभिरी दर्जे तक बन्दगी का अहसास बेदार नहीं होता या रोज़ा रजने के बाद भी हम अपने आप में अनानियत, नइसपरस्ती, तक़ब्बुर (धमंड) व रस्मी धंजादतो के ज़रासीम (वायरस) पाते हैं तो हमारे लिये ज़री है कि हम अपने रोज़े का फिर से मुआयना करें या पुदका

એહતિસબા લે. જેસાકિ કહા ગયા હૈ, જિસને રોજી રખા ઈમાન વ એહતિસાબ કે સાથ, ઉસકે તમામ પિછલે ગુનાહ માફ કર દિયે ગયે. (મિશકાત)

કુછ લોગ ઈસ માહ મેં અપને કમજોર ઉજ્ર પાકર રોજે સે કિનારા-કશ હો જાતે હૈં ઓર પૂરા મહીના ગુજર જાતા હૈં મગર ઉનકી જિન્દગી ઓર દિનચર્યા મેં કોઈ ફર્ક નહી પડતા, કિસી કિસ્મ કી તબ્દીલી નહી આતી. ઈસકે બરઅકસ હમારે કુછ ભાઈ રમજાન શુરૂ હોતે હી રમજાન કી ચૂનિફાર્મ (ટોપી, કુર્તા, તહમદ વગેરહ) ધારણ કરકે મસ્જિદોં મેં પાલિહાના અંદાજ સે લપકતે હૈં ઓર મહીને ભર ઈસ તરહ મસ્જિદોં કો પકડે રહતે હૈં કિ યહ અંદાજ હોતા હૈં કિ ઈસ્લામ કા સૈલાબ અબ ચારોં તરફ સે ઉબલ પડા હૈં ઓર અબ મસ્જિદોં કી વીરાનિયાં હમેશા કે લિયે ખત્મ હો ગઈ હૈં. મગર અફ્સોસ! માહે રમજાન કે જુદા હોતે હી હમારે યહ રમજાની ભાઈ મસ્જિદોં સે એસે રૂખ્સત હોતે હૈં જેસે ઉનકા ઈનસે કોઈ વાસ્તા નહી ઓર જુમ્આ મેં ઉસી તરહ નજર આતે હૈં જેસે યહૂદ વ નસારા અપની-અપની ઈબાદતગાહોં મેં સનીચર વ ઈતવાર કે દિન ઈબાદત કે લિયે નજર આતે હૈં. હમારી ઈસ બેહિસી કી વજહ યહી હૈં કિ હમને રોજે જેસી અહમ ઈબાદત કો એક રસ્મી અમલ સમજા જબકિ યહ એક જિન્દા ઈબાદત હૈં.

જિન્દા અમલ આદમી કે પૂરે વજૂદ સે નિકલતા હૈં. વો ઉસકી પૂરી હસ્તી કા એક ઈજહાર હોતા હૈં. ઈસકે અલાવા રસ્મ કી હૈસિયત મહજ એક બેરૂહ બાહરી અમલ કી હોતી હૈં. આદમી કલ્બ વ રૂહ કો ઉસમેં શામિલ કિએ બગેર ઉપરી તોર પર ઉસે અંજામ દે દેતા હૈં. અલ્લાહ હમેં જિન્દા ઈબાદત કરને વાલા આબિદ બનાએ ઓર રસ્મી ઈબાદત સે દુર રખે, આમીન!! ઈસ માહે મુબારક કા યહ મુબારક તોહફા કબૂલ કીજિએ, ઈસ ઉમ્મીદ કે સાથ કિ ઈસ બાબરકત મહીને મેં આપકી દિન-રાત કી ઈબાદતોં મે યહ કિતાબ કિસી હદ તક આપકી મુઆપિન (મદદગાર) બન સકે ઓર અલ્લાહ હમારી ઈસ મેહનત સે ખુશ હો જાએ યહી હમારી મેહનત ઓર કોશિશોં કા મક્સદ હૈં, અલ્લાહ ઈસે કબૂલ કરે. આમીન!! ઈસી મેં હમ સબકી કામચાબી હૈં. વસ્સલામ,

અબ્દુર્રહમાન ખિલજી

અમીર જમઇયત અહલે હદીસ રાજસ્થાન

कुर्आन में रोजे का हुकम ९९ कदर तइसील के साथ आया है। यहाँ कुर्आन की ९९ आयतों का तर्जुमा नकल किया जाता है,

अय ईमान वालों! तुम पर रोजे ईर्ज किये गये जिस तरह तुमसे पहले की उम्मतों पर ईर्ज किये गये थे ताकि तुम परहेजगार बनो। गिनती के बन्द दिन हैं, फिर तुममें से कोई शप्स भीमार हो या सङ्गर में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले। जो कोई जयादा नेकी करे तो वो उसके लिये ओहतर है।

रमजान का महीना जिसमें कुर्आन उतारा गया, हिदायत है लोगों के लिये और रास्ते की तरफ़ खुली निशानियाँ और हक व ब्यातिल में ईंसला करने वाला। यस तुममें से जो शप्स ९९ महीने को पाये वह ९९से रोजे रभे और जो भीमार हो या सङ्गर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लीये आसानी बालता है। वह तुम्हारे साथ सफ़ती करना नहीं बालता ९९सलिये के तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह की बडाई बयान करो ९९ पर की उसने तुमको राह बतलाई और ताकि तुम शुक्कगुनार बनो।

तुम्हारे लिये रोजे के रातों में अपनी भीवियों के पास जाना जयज किया गया। वह तुम्हारे लिये लिबास है और तुम उनके लिये लिबास हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से बयानत कर रहे थे तो उसने तुम पर ९९नायत की और तुमको भाङ्ग कर दिया अब तुम उनसे मिलो और बालो जो अल्लाह ने लिख दिया है। और भाओ व भीओ यहाँ तक कि सुबह की सुङ्क धारी काली धारी से अलग बालिह हो जाओ। फिर रोजा पूरा करो रात तक और जब तुम मस्जिद में अतकाङ्ग में हो तो भीवियों से सोहबत न करो। यह अल्लाह की हई है तो ९९नके नजदीक न जाओ। ९९ तरह अल्लाह अपनी आयतों लोगों के लिये बयान करता है ताकी वह बयें। (अल बकरह १८३-१८७)

यह रोजे का बुनियादी हुकम है। ९९सकी और तइसील हदीसों में आइ है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने सहाबा किराम को रमजान की आमद पर पहले से ही आगाह इमति हुअे भुशभजरी दी।

अय लोगों! तुम पर अक ब्याबरकत और ओडे मतर्बे वाले महीने ने साया डाला है। ९९स माह (रमजान) के दिनों का रोजा तुम पर अल्लाह ने ईर्ज किया है और ९९सकी रात की ९९बादत (तरावीह) को नङ्किल करार दिया है। जिसने ९९स माह में नेकी और बलाई की गोया उसने दूसरे महीनों में ईर्ज अदा किया और जिसने ९९स महीने में ईर्ज अदा कीये गोया उसने दूसरे महीनों में सत्तर ईर्ज अंजाम दिये। यह महीना सफ़्र का महीना है और सफ़्र का सवाब जन्नत है। यह गमज्वारी का महीना है ९९स महीने में मोमिन की रोज़ में ९९जाङ्ग हो जाता है। जिसने ९९स माह में किसी रोजेदार को बिलाया तो उसके लिये यह ९९इतार कराना उसकी मङ्गिरत का सफ़्फ़ होगा और उस रोजेदार के बराबर उसको अज भी मिलेगा और रोजेदार के अज में किसी किरम की कोई कमी नहीं होगी। (मुत्इकुन अलैहि)

नबी-अ-करीम सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जन्नत में अक दरवाजा रख्यान नाम का है. कयामत के दिन रोजेदार ही इस दरवाजे से दाखिल होंगे, उनके सिवा कोय दाखिल नहीं होगा. उनसे कहा जायेगा, रोजेदार कहाँ हैं? लिहाजा वो जडे हो जायेंगे और जब वो दाखिल हो जायेंगे तो इस दरवाजे को बन्द कर दिया जायेगा. फिर इस दरवाजे से कोय दाखिल नहीं होगा.

रमजान के इत्हास

रमजान का महीना रहमतों और बरकतों का महीना है. इस महीने में अक मोमिन अपनी जिन्दगी में और पूरे मुआशरे में चारो तरफ़ नेकियों, रहमतों व बरकतों की बहारें देखता है और इमान की इसलियों पर शबाब का नजारा करता है. रोजे के जरिये रोजेदार को जिस्मानी सेहत, इहानी पाकी, मआशी इराफानी (माल में बरकत) और दूसरी बरकतें हासिल होती हैं जुदापरस्त लोगों के लिये रमजान के महीने का आना ऐसा ही है जैसे इसले-बहार का आना.

इस माह में जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं. दोज़ख के दरवाजे बन्द कर दिये जाते हैं क्यो कि लोग इबादत में मसइफ़ रहते हैं, नमाजों की तरफ़ रागिब और नेक कामों में अक-दूसरे से मुकाबला करते हैं सदका, भैरात, कराबतदारों, मिस्कीनों और यतीमों के साथ हुस्ने-सुलूफ़ करते हैं. हाजतमन्टों और जरूरतमन्टों के काम आते हैं. कसरत से दुआ, इस्तग़्फ़ार और कुर्आन पाक की तिलावत करते हैं. रोजेदारों को इफ़तार के लिये बुलाते हैं और जाहिर है कि इस किस्म का किरदार रफने वालों के लिये जन्नत के दरवाजे खोल दिये जायें और जहन्नम के दरवाजे बन्द कर दिये जायें.

यही वजह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम यों तो निहायत सजी और दरियादिल थे ही लेकिन रमजान में आपकी सभावत और दरियादिली इन्तिहा को पहुँच जाति थी. इस महीने में आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम बडे पैमाने पर सदका, भैरात और हुस्ने सुलूफ़ इमति थे.

इस माह में बन्दों पर रहमत के बादल छा जाते हैं और रहमतों की बारिश हर तरफ़ होने लगती है. अल्लाह रब्बुल इज्जत अपने बन्दों की इज नेकियों में मुकाबला आराध को पसन्दीदगी नजर से देखता है और इरिशतों के सामने उन पर इफ़्र करता है.

सबसे बडा बदनसीब वो है जो इस महीने को पाकर भी अपने रब की रहमतों से महइम रह जाये.

याँद देजना

रमजान का आगाज शाबान की आखिरी तारीख को याँद देजने से होता है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने रमजान का याँद देजा तो इरमाया, अल्लाहुम्मा अर्रिल्लहु अलैयना मिलअम्नि वल इमानि वरसलामति वल ईरलामि रफ़िफ़ व रफ़्फुकल्लाह. (तिर्मिथ)

अय! अल्लाह तू इस आने वाले महीने को हमारे लिये अमन, धर्मान, सलामती व धरस्लाम का चाँद (महीना) बना दे और अे चाँद! मेरा और तेरा रब अल्लाह है.

इससे मालुम हुआ कि रमजान के महीने का भास मकसद आदमी के अन्दर धर्मान व धरस्लाम, अमनो-सलामती के अेहसास को जगाना है. साथ ही मुसलमान चाँद को मुभातब करके अपनी अफ्दियत धजहार यह कहते हुअे करता है कि याहे आसमान की बुलन्दी पर मुश्कुराता हुआ चाँद हो या जमीनी इर्श पर चलने वाले धन्सान व दीगर मज्लूक, सब उस रब व धलाहे वाहिद के गुलाम है. चाँद देजकर उनका शउर इस अेहसास के साथ जाग उठता है कि वो गर्दिशे जमीन के उस भरहले में दाजिल हो गअे हैं जबकि उनको अपनी जिन्दगी का नकशा भिल्कुल बदल देना चाहिअे.

रोजे की नीयत करना: रोजे का पहला अमल यह है की आदमी रोजे की नीयत करे. हदीस में आता है कि रोजा सिई वह शफ्स रजे जे इजर से पहले धरादा कर ले.

इससे मालूम हुआ कि रोजा अेक धरादतन अमल है न कि महज अेक रस्मी अमल. वो शउर के तहत अन्जाम दिया जाता है न कि गइलत व बेजबरी के तहत. यही मामला पूरे दीन का है. दीन पूरा का पूरा शउर से तअल्लुक रजता है. वही शफ्स दीनदार है. जे दीनी आमाल को जिन्दा शउर के तहत अदा करता है.

सहरी जाना: इसके बाद रोजेदार इजर से पहले सहरी जाता है. हदीस में आया है कि सहरी आअो क्यो कि सहरी में अरकत है. अेशक अल्लाह और उसके इरिशते सहरी आने वालों पर रहमत बेजते हैं.

सहरी जाना गोया अपने अन्दर रोजे की आमदगी पैदा करना है. कम्प्युटर की धस्तलाह में यह जहन की प्रोग्रामिंग है. इजर से पहले सहरी जाना इस बात की याद-दहानी है कि अल्लाह जब बजाहिर किसी सप्त काम का हुकम देता है तो उसी के साथ उसके लिये आसानी का धन्तेजाम भी इरमा देता है. वह रोजे का हुकम देता है तो उसी के साथ सहरी की इप्सत भी देता है. वह दापत की जिम्मेदारी डालता है तो मदउ के मुकाबले में दाध की हिइजत की जिम्मेदारी भी लेता है. जब जिहाद की तरगीब देता है तो उसी के साथ इरिशतों से ये इरमा देता है कि मुजाहिदीन को पुसूसी मदद पहुँचाकर उन्हें कामयाब करे.

इसी के साथ रोजेदार दिनभर न सिई हराम चीजों से बयता है बल्कि अल्लाह की तरफ से हलाल जे की पकते मुर्करह तक हराम करार दी गध चीजों से भी परहेज करता है. नमाज, जमाअत व दुआ में पहल करने में लपकता है. ये परहेज ये ध्बादते, धस्तगइर, ये दुआअे, ये हक तआला के हुकम की तामील की कोशिशें रोजेदार की पिधली अनाजियत व नइस परस्ती वाली शफिसयत को मिटाकर उसमें नये रब्बानी धन्सान का जहूर करती है और इस नये धन्सान की तामीर में तकवा बुनयाद होती है.

इइतार करना: दिन भर नमाज, सदका, दुआ, तिलापते कुर्आन और याहे धलाही में गुजारकर रोजेदार शाम को इइतार करता है. जैसे ही वह अल्लाह के रिजक को मुँह में दाजिल करता है जैसे ही उसकी जवान इौरन अल्लाह के शुक्र से तर हो

जाती है और उस पर ये हुआ मचलने लगती है, गुरुगुरुमा वपतल्लति उड़क व सपतल अजरन धन्शाअल्लाह (अबू दाउद) प्यास दूर हो गध, रगें तर हो गध और अत्र व सपाज धन्शाअल्लाह जर मिलेगा.

गोया रोजेदार अपनी टिन तर की रिऊक और जर्री चीजों से महरमी के बांध के टुट जाने पर ली अपने रज को नहीं लूलता है. टिन तर झकें के बाट जाना और पानी को पाकर रोजेदार को जो शुशी होती है वो उस ऊयाटा बडी शुशी की अलामत है जो आभिरत में अल्लाह के अन्टी धनाम को पाकर रोजेदार को होगी. रमजान टाडल अमल की अलामत है धइतार टाडल जज की अलामत.

❦❦❦ रोज और कुर्आन ❦❦❦

कुर्आन में रोजे का हुकम देते हुअे नीय में कुर्आन का शिक्र किया गया है इससे मालुम होता है कि रोजे और कुर्आन में अेक पास मुनासिबत है. कुर्आन के अल्लेऊ ये है, रमजान का महीना जिसमें कुर्आन उतारा गया लिदायत है लोगों के लिये और धसमें जुली निशानियाँ हैं लिदायत के लिये और लुक व प्यातिल में कैसला करने वाला. यस तुम में से जो धस महीने को पाअे वह धसके रोजे रअे. (बकर: १८५)

कुर्आन जिस माह में नाऊिल हुआ वह कमरी (चाँट के हिसाब) केलेन्डर के अेतबार से रमजान का महीना था. पहली पछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम पर उस पकट उतरी जब आप गारे हिरा में थे. गारे हिरा में कुर्आन का उतरना शुड हुआ और तकरीबन २३ साल की मुदत में पकट-पकट पर थोडा-थोडा नाऊिल होने के बाद वह महीना में अपनी तकमील को पहुँचा यानी पूरा हुआ.

धस महकूऊ किताब, जिसे कयामत तक अल्लाह की हिइऊत हासिल है और जिसमें कामयाब धन्सानी जिन्दगी के राज हैं, उसका गुजूल कोध मामूली पाकिया नहीं है. यह धस आसमान के नीचे पेश आने वाले तमाम पाकियात में सबसे जयाटा अहम पाकिया है. कायनात अेक राज है और जो किताब धस राज को जोलती है वह सिई कुर्आन है. कुर्आन जैसे हिदायतनामे का गुजूल धन्सान के उपर अल्लाह तआला का सबसे बडा धनाम है कयों कि जन्नत हर मोमिन की मंजिल है और धस मंजिल तक पहुँचने का रास्ता उसे कुर्आन बताता है.

रमजान का महीना धसी नेअमत की सालाना याटगार मनाने का महीना है. कुर्आन के गुजूल की यह याटगार जशन की सूरत में नहीं मनाध जाती बल्कि तकवा और शुकगुजारी के माहोल में धसकी तिलापत से अपने रोजों को सजं कर मनाध जाती है.

रमजान का महीना कुर्आन को पढने और समऊने का महीना है. धस महीने में जुसूसियत से कुर्आन की तिलापत की जाती है. रातों में कयामुल्लेल में कुर्आन को पढा व अटज से सुना जाता है. यह महीना धस मकसट के लिये पास है कि धसमें अल्लाह की सबसे बडी नेअमत का सबसे जयाटा तजकीरा किया जाअे और धसकी गहराधयों में गोता लगाया जाअे.

गुजूले कुर्आन के महीने में कुर्आन को पढते हुअे आदमी को वो लमहा याट आता है जब अल्लाह ने धन्सानों पर रहम इरमाकर उसे धस हिदायत के गूर से

नवाजा था, उस पकत को याद करके वह पुकार उठता है कि जुदाया तू मेरे सीने को ली धंस नूर से मुनप्पर कर दे. कुर्आन में वह उन जुशानसीब बन्दो के बारे में पढता है, जिन्होंने मुप्तलिङ्ग अपक़ात में रब याही जिन्दगी गुजारी, वह कह उठता कि जुदाया तू मुझे ली अपने पसन्दीदा बन्दो मे शामिल इरमा कुर्आन में वह जन्नत और जहन्नम का तजकीरा पढता है उस पकत उसकी इह से यह सदा जुलुन्द होती है कि जुदाया, मुझे जहन्नम से बचा ले और मुजको जन्नत में दाखिल करदे.

धंस तरह कुर्आन उसके लिये ऐसी किताब बन जाता है जिसमें वह ज़ुअे. जिसमें वो अपने लिये रिज़क हासिल करे. जिसके नूरानी रास्तों पर चलते हुअे जन्नत में दाखिल हो जाअे.

कुर्आन बन्दे के उपर अल्लाह का धनाम है और रोजा बन्दे की तरइ से धंस धनाम का अमली अतराइ और शुक्र.

यही वजह है कि रमजान में तिलावत हमारी नजात का जरिया बन जानी है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, रोजा और कुर्आन मोमिन के लिये सिङ्गरिश करेगे, रोजा कहेगा, अय मेरे रय्! मैंने धंस शरफ्स को दिन में आने और दूसरी लज्जतो से रोका तो यह इका रहा. अय मेरे रय्! धंस शरफ्स के पारे में मेरी सिङ्गरिश कुपूल इरमा. कुर्आन कहेगा कि मैंने धंसको रात में (तिलावत की वजह से) सोने से रोका. अय मेरे रय्! धंस शरफ्स के पारे में मेरी सिङ्गरिश कुपूल कर तो अल्लाह उन दोनों की सिङ्गरिश को कुपूल इरमाअेगा. (जेहकी, मिशक़ात)

अल्लाह तआला हमें तोड़ीक दे कि हम धंस बाबरकत महीने में अल्लाह के कलाम के जरिये अपने रब की मग्दरते हासिल करे. आमीन!!

❦❦❦ मसाधले रमजान ❦❦❦

रमजान की इज़ीलत व अहक़ाम के बाद ज़री है कि हम रमजान के जास-जास मसाधल समजे ताकि रमजान का अेहितामाब बाशउर होकर टिली आमादगी व धल्मीनान के साथ कर सके.

सहरी: रमजान के महीने में इज़र से पहले जाना जाने को सहरी करना कहा जाता है. रोजे के लिये कुप्पत और सहलत के लिये सहरी जाना निहायत ज़री है. अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, सहरी आने में परकत है, कुछ न हो तो पानी के बन्द घुँट ली पी लिया करो और अल्लाह के इरिशते सहरी आने वालों पर सलाम भेजते हैं. (मुसनद अहमद)

सहरी का वक़्त: हजरत ज़ैद बिन साबित (रज़ि.) बयान करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम के साथ सहरी भाध़ किर हम नमाज के लिये अे हुअे. पूछा गया धनके दरभ्यान यानी सहरी से नमाज के पीय कितना इसला होता था. इरमाया पयास आयते पढने के परापर. (जुजारी व मुस्लिम)

रोजे की नीयत करना: रोजे की नीयत करनी ज़री है. बगैर नीयत के रोजा नहीं होगा. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, अमलों का दारोमदार नीयत पर है. (जुजारी)

धंसमें रोजा ली शामिल है. आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने रोजे के मुतअल्लिक जास तौर पर इरमाया, जे शरफ्स सुपुह से पहले रोजे की नीयत न करे

तो उसका रोग नहीं होगा. (तिर्मिञ्)

जबान से नीयत करना जरूरी नहीं है बल्कि दिल में रोजा रफने का धरादा कर लेना जरूरी है. जबान से केहने का कोय सबूत नहीं. नीयत का मतलब ही दिल का धरादा है.

ईंत्तार: ईंत्तार के मुतअल्लिक अल्लाह तआला का हुकम है, और जाओ प पीयो यहां तक कि इत्तर की सईद धारी (रात की) स्याह धारी से अलग हो जाओ. (सूरह बकर: १८७)

ईसी हुकम को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने यूं समजाया, जण् ईस (मशरिक) से रात आ जाओ और उस (मग़िब) की तरफ़ दिन चला जाओ और सूरज डूब जाओ तो रोजेदार का रोग ईंत्तार हो गया. (बुजारी, मुस्लिम, बरिवायत हजरत उमर (रज़ि.))

ईंत्तार में देरी न करना: हजरत सहल बिन सअद बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, हुमेशा वह लोग ललाई पर रहेंगे जो ईंत्तार में जल्दी करेंगे. यानी वक्त होनेपर तापीर (देरी) न करेंगे. (बुजारी व मुस्लिम)

अजूर वरना पानी से ईंत्तार: हजरत सलमान बिन आभिर बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जण् तुम में से कोई शप्स ईंत्तार करे तो वह अजूरों पर ईंत्तार करे. अजूर न पाओ तो पानी पर रोग ईंत्तार करें ईंसलिये कि वह पाक है. (अबूदाउद, तिर्मिञ्)

ईंत्तार के आद की दुआ: जहबजजमाओ वबतल्लतिल उइक व सभतल अजरन ईंशाअल्लाह (अबूदाउद) यानी प्यास जाती रही और रगें तर हो गइ और ईंशाअल्लाह अज्र साबित हो गया.

सइर के दौरान रोग: सइर के दौरान या मर्ज की शिदत में रोजा न रफ सकते हो तो छोड दीजिओ और दूसरे दिनों में उसकी कजा कीजिओ कुर्आन में है, जो कोय भीमार हो या सइर में होतो दूसरे दिनों में रोजों की तादाद पूरी कर ले.

(बकर: १८५)

लूल में जाने-पीने से रोग नहीं जाता: हजरत अबू हुरेरह (रज़ि.) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जण् तुम में से कोई आदमी लूल कर आ-पी ले तो वह अपने रोजे को पूरा करे. ईंसलिये कि अल्लाह ने उसको पिलाया पिलाया है. (बुजारी व मुस्लिम)

जुद-ज-जुद के आ जाने पर रोग नहीं टुटता: अगर रोजे में जुद-ज-जुद के (उल्टी) आ जाओ तो रोजा नहीं टुटता. हां, अगर कसदन (जान-बूझ कर) के की हैं तो रोजा टुट जाओगा और उसकी कजा जरूरी है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जिसे जुद के आ जाओ उस पर कजा नहीं है और जो कसदन के करे वह कजा करे. (ओहमद, अबूदाउद)

नापाकी की हालत में रोग: जो शप्स आभिर रात में नापाकी की हालत में जागे ओर उसे अन्देशा हो कि गुस्ल करने में सहरी का पकत निकल जाओगा तो उसे

याहिये कि सहरी कर ले, लले गुरल सुजह साहिक के जाट करे क्यो कि उम्मे सलमा (रजि.) इरमाती हें कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम जिमाअ के प्याद प्हालत जनापत (नापाकी) सहरी इरमाते, उसके प्याद आप गुरल करते और रोज रभ लेते लेकिन इस रोजे की कजा नहीं इरमाते. (जुजारी)

रोजे की हालत में ओहतलाम (स्वप्नदोष) होने पर रोज नहीं दुटता: रोजेदार को अगर दिन में ओहतलाम हो जाये तो उससे उसके रोजे में कोय जराबी नहीं आती. उसको गुरल कर लेना चाहिये. रोज न तोडे क्यो कि यह जन्टे के बस की जात नहीं. जबी सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम से इस बारे में पूछा गया तो आपने इरमाया, जब ओहतलाम वाला पानी (यानी वीर्य) देखे तो उस पर सिई गुरल वाजिब है. रोज उसका सलामत रहेगा. (तिर्मिज)

रोजे की हालत में हैज आ जाने पर रोज जाता रहा: रोजे की हालत में हैज (माहवारी) व निहास आ जाये तो रोज टुट जायेगा. उसकी मुदत जत्म होने के बाद रोज रजे. छुटे हुये रोजों की कजा जरूरी है. (अजुदाउद, तिर्मिज)

रोजे की हालत में अपनी जीवी से सुलुपत कर जैठने का कइशारा: अबू हुऐरा (रजि.) से रिवायत है कि ओक शम्स आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम की भिदमत में आया और कहा कि मैं हुलाक हो गया पूछा गया कि क्या हो गया? तो कहा कि मैं अपनी जीवी से रोजे की हालत में हुमबिस्तर हो गया. तब आपने उसे दो महीने लगातार रोजे रभने या साठ मिरकीनों को जाना भिलाने के लिये जतौर कइशारा कहा.

किस्ती का रोज भुलवाना: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया कि अगर कोय अपने भाई को अपने यहां इइतार कराये तो रोज भुलवाने वाले को उस रोजेदार के परापर सवाप भिलेगा और रोजेदार (रोज भोलने वाले) के सवाप में कोय कभी नहीं आयेगी. (तिर्मिज)

नोट: रोज इइतार का ओहतमाम करने वाले का जुद का रोज नहीं है तो यह रोजे का जुला मजाक है और इइतार की आड में ओक दुनियावी रस्म, सियासत या शोहरत तलबी की निशानी है. लिहाजा इससे परहेज करे.

अतिकाइ: अतिकाइ के मजानी ठहरने के हें और शरइ महापरे में दुनिया के सारे कारोबार छोडकर इबादतें इलाही की नीयत से मस्जिद में दिन-रात ठहर कर इबादत करने को अतिकाइ कहते हें.

अतिकाइ की हालत में कसरत से नइली नमाज पढना, कुर्आन मजुद की तिलापत और ठिके इलाही, तस्बीह, अल्लाह की हम्द व तकबीर जयान करना और दइद शरीइ पढने में मशगुल रहना चाहिये. कुर्आन व हदीस का दर्स देना और मस्जिद में पअज व नसीहत करना भी जाइज हें क्यो कि यह भी इबादत के काम है.

अतिकाइ की बडी इज्जिलत है. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जिसने रभजन शरीइ में इस दिन का अतिकाइ किया उसे दो रुज और दो उमरे के परापर सवाप भिलेगा. (बैहकी)

मोअतकिइ (अतिकाइ में जैठने वाले) का आकिल, मुसलमान होना, पाक होना, अतिकाइ की नीयत करना और मस्जिद का होना जरूरी है याहे मई हो या ओरत. (जुजारी)

हजरत आर्षशा (रफ़ि.) इरमाती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने रमजान शरीफ़ के आभिरी अशरे (दस दिन) में आभिरी दस तक ऐतिकाइ किया. (जुजारी)

अक मर्तबा अक साल रमजान में नहीं किया गया था तो शव्वाल में उसकी अदा इरमाया.

ऐतिकाइ की हालत में बिला ज़रूरत मस्जिद से बाहर जाना ज़ायज नहीं है. अल्बता पेशाब, पाजाना, इर्ज़ नमाज और जुम्अ की नमाज के लिये बाहर जा सकते हैं.

ऐतिकाइ की हालत में अपनी बीवी से मुबाशरत (हमबिस्तरी) करना मना है. अल्लाह तआला ने कुर्आन में इरमाया, ऐतिकाइ की हालत में तुम अपनी बीवीयों से मुबाशरत न करो. (अकर: १८७)

सुबह की नमाज पढ़ कर ऐतिकाइ की जगह दाखिल होना याहिअे. हजरत आर्षशा (रफ़ि.) इरमाती है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम जब ऐतिकाइ का इरादा करते तो सुबह की नमाज पढ़ कर अपने भेमे में दाखिल होते. (इब्ने माजा, बेहकी)

═══════ लैलतुल कद्र ═══════

रमजान की मुफ्तलिह जासियतों में से अक जासियत यह भी है कि इस माह की आभिरी पांच ताक (पिषम) रातों में अक ऐसी रात छिपी हुई है जिसमें की गध इबादत को हज़र महीनों के बराबर बताया गया है. उनका नाम लयलतुल कद्र (तकदीर की रात) है.

इस रात की अहमियत इसलिये भी बढ़ जाती है कि यही वो रात है जिसमें इन्सानों की कामयाब जिन्दगी का हिदायतनामा कुर्आन नाज़िल हुआ. जैसा कि कुर्आन में बताया गया है, मैंने इसे (कुर्आन को) लयलतुल कद्र में नाज़िल किया. (सुरह कद्र: १)

इस रात में बहुत जयादा इरिशते उतरते हैं. यहां तक कि जमीन पर इरिशतों की कसरत (अधिकता) हो जाती है. पूरी जमीन पर इहानी माहोल पैदा हो जाता है. इस रात में मोमिन बन्दों के अमल व इबादतकी कद्र व कीमत बहुत बढ़ जाती है और अल्लाह से मांगी गध हुआ को अल्लाह जल्द कबूल करता है और गुनाहों से तोबा करने वालों पर उनके रब की तरफ़ से मग्दिरत की बरसात इट पडती है.

लयलतुल कद्र की दुआ: हजरत आर्षशा (रफ़ि.) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम से पूछा कि अगर मैं लयलतुल-कद्र को पाई तो मैं किस तरह दुआ करु? आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, इस तरह कहो, अल्लाहुम्भ: इन्नक अकुब्बुन तुहिब्बुल अइव इअकु अन्नी (मुत्तकिअ अलैहि) यानी अे अल्लाह! तु माइ करने वाला है और माई को पसंद करता है, तु मुझे माइ इरमा.

इससे अंदाजा होता है कि अल्लाह से मांगने की सबसे बडी चीज माई है. माई या मग्दिरत बन्दे के लिये जन्नत का दरवाजा खोलती है. अल्लाह तआला ने जिस बन्दे को माइ कर दिया तो समजे उसने सबसे बडी कामयाबी हासिल कर ली. इस्लीलीये सबसे बेहतर पकत में सबसे बेहतर मांगने की चीज माई के सिवा और

क्या हो सकती है। फिर धंस हुआ के जरिये बन्दा हर हाल में अल्लाह के सामने पुष्ट को गुनाहगार मानते हुये अपनी आखिरी व धन्कसारी को बाहिर करता है। आंसूओं और हसरत के साथ अपने लिये मग़ि़रत व माफ़ी की दुआ करता है।

हमारे बहुत से भाई बिला किसी मजबूत दलील के रमज़ान की रणवी शब को ही शबे-क़द्र मानते हैं और सिर्फ़ धंसी रात में धबादत करने को काफ़ी समझ लेते हैं। जबकी किसी भी सही हदीस से धंस रात के मुक़र्रर होने का कोय़ सबूत नहीं मिलता है बल्कि कहा गया है कि आबिरी अशरे की ताक़ रातों में (यानी २१, २३, २५, २७, व २८) में से अेक रात है। धंसे तलाश करो। यानी धनमें धबादत करो। शायद किसी अेक रात का तअय्युन अल्लाह की तरफ़ से धंसलिये नहीं किया गया हो कि शबे-क़द्र की इज़ीलत से झायदा उठाने के शौक़ में लोग जयादा से जयादा वक़्त धबादत में गुज़रें और किसी अेक रात को काफ़ी न समझ ले। लेकिन हमारे कुछ भाइयों की ही नासमंज और कम धल्मी है कि २७ वी शब को शबे-क़द्र समझ कर चरागां करते हैं, धंस रात को मेलों-ठेलों, रोशनियों का रूप दे कर सैर व तड़रीह, धुमने-डि़रने और जाने-पीने में गुज़र देते हैं। जबकी अल्लाह ने तो धंस आबिरी अशरे की गैर मुतय्यन (गैर मुक़र्रर) ताक़ रात की अहमियत बतलाते हुये धंसे क़द्रो मन्जलत की रात, कही तकदीरों के ड़ैसले की रात बतलाते हुयेकहा कि धंस रात में बेशुमार इरिशते जमीन पर उतरते हैं और न सिर्फ़ इरिशते बल्कि हज़रत जिब्राइल अमीन भी जमीन पर आते हैं। यह रात इज़र तक सलामती ही सलामती है और धंस सलामती व क़द्रो मन्जलत की रात को अगर हम भेल तमाशों, जाने-पीने, सैर व तड़रीह में गुज़र दें तो यकीनन हमसे बढकर बदनसीब कौन होगा कि जहां अल्लाह तआला अपनी नेअमते व रेहमते लुटा रहा हो, सलामती के ड़ैसले हमारे नाम लिखने को तैयार हो, अेसे वक़्त हम उसे नाराज करके उसके धनाम व धकराम नहीं बल्कि उसका ग़जब अपनी तकदीर में लिखवां लें।

हम अल्लाह के शुक्रगुज़र हैं कि उसने हम पर धतना बडा अहसान इरमाया कि हमारी मुप्तसर सी उन्न में अेसी कितनी शबे-क़द्र धनाम इरमाय़ जिसकी धबादत हज़र महीनों की धबादत से बेहतर है और हज़र महीने ८३ साल ४ महीने के बराबर होते हैं।



उक़ात



उक़ात या धन्क़ाक़ की अरब धंसार है. (सूरह हशर: ८)

अल्लाह याहता है कि हर शप्स अपने उपर दूसरे का हक़ समझे. अेसा मुआशरा बने जिसमें लोग लेने के बजाअे देने के लिये तैयार हों. दूसरे का धंस्तेहसाल (शोषण/नुकसान) करने के बजाय दूसरों का झायदा पहुंचाने का मौका तलाश करें. हर अेक के अन्दर यह मिनाज परवरिश पाअे कि दुनिया में उसका कोय़ हक़ नहीं. यहां उसकी सिर्फ़ जिम्मेदारीयां हैं. धंसी धंजितमाय़ इह को पैदा करने के लिये उक़ात इर्ज़ की गय़ है. धंसकी अहमियत का अंदाज़ धंससे लगाया जा सकता है कि कुर्आन में ज़तनी बार नमाज का हुक़म आया है उतनी ही बार उक़ात का हुक़म भी आया है.

ऋकात का मतलब है पाकी और सड़ाई. अपने माल में से अेक हिस्सा हाऋतमंटे और भिस्कीनों के लिये निकालने को ऋकात ढसलिये कहा गया है कि ढस तरह आढमी का माल और उसके माल के साथ ढुढ आढमी का नइस ली पाक हो जाता है.

सूरह तौबा में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को कुइइर व मुशिरकीन से ञंग का हुकम उस वकत तक के लिये ढिया गया जब तक कि वे कुइ व शिर्क से तौबा न कर लें और न सिई तौबा बलिक ऋकात अढा न कर ढे.

इिर अगर वो कुइ व शिर्क से तौबा करें, ढमान ले आअें और नमाज ढढें और ऋकात ढें तो वह तुभुहारे ढीनी लाई है. (सूरह तौबा: ११)

यानी ऋकात नहीं ढेने वाला हरिज ढस लायक नहीं की अहले ढमान की जमाअत में ढाजिल किया जाअें वह तो अेक सडा हुआ अंग है जिसे जिस्म से अलग ही कर ढेना बेहतर है ढर्ना सारे जिस्म को सडा ढेगा. यही वजह है कि आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम की वइत के बाढ जब अरब के बाज कबीलों ने ऋकात ढेने से ढन्कार किया तो अबूबक़ सिढीक (रऋि.) ने उनसे ढस तरह ञंग की ञैसे काइरों से की जाती है. हालांकि वे लोग नमाज ढढते थे. अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम का ली ढकरार करते थे. ढससे मालूम हुआ कि ऋकात के बगैर नमाज, रोजा और ढमान की शहाढत सब बेकार हैं. किसी चीज का ली अेतबार नहीं किया जा सकता.

जमीन व आसमान में अे कुछ है सभ अल्लाह की भीरार (भिलिकयत) है. (सूरह ढढीढ: ७)

सारा रिऋक रिऋकिल्लाह है. (सूरह मुल्क: १ॢ)

सारा माल अल्लाह तआला का माल है. (सूरह नूर : ३३)

अे कुछ किसी को मिला हुआ है वह अता-अे-रभ है. (सूरह बनीढस्राढल : २०)

अेसी हालत में अगर अल्लाह सारे माल व मताअ को अपना हिस्सा करार ढेता तो उसे अेसा करने का ढक था. मगर उसने सिई अेक ञुज को अपना हिस्सा करार ढेकर बकिया को ढमारे ढपाले कर ढिया है.

और अल्लाह का ढुक ढे (इसल) काढने के ढिन. (सूरह अनआम : १४१)

ढढीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जिस् माल की ऋकात अढा नहीं की गढ तो वो गंज सांढ अनकर अभील (कंभूस) की गढन में लढेढ ढिया नअेगा और वह उसकी ढेनों ननिभ की कनढटी को ढसता रहेगा और कहेगा मैं तेरा माल हुं. (बुजारी व मुस्लिम)

ढस तरह ढुशक साली और कहत (अकाल) और ढूसरी आइते आने का सबब ली ऋकात न ढेने को बताया गया है यानी जकात न ढेना अल्लाह के अऋाब को आपाज ढेना है.

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, जभ कोई कौम ऋकात ढोऋ ढेती है तो अल्लाह तआला उसको ढुरकसाली और कइत में मुभितला कर ढेता है. (तबरानी)

अल्लाह तआला ढमें अपने अऋाब से बयाअे और ढूरी-ढूरी ऋकात ढभ्लास के साथ अढा करने की तौडीक अता इरमाअे. आमीन!!

ऋकात का निसाभ: ढ्याल रहे के ऋकात उसी माल या नकढी ढर ढी जाती है जिस् ढर अेक साल गुजर जाअे. ऋकात जब साल गुजर जाअे तब अढा की जा सकता है लेकिन युंकि माहे रमजान में अल्लाह तआला ढर नेकी व ढबाढत का सिला कढ ढर्जे बढ कर ढेता है. ढसीलीये ढम ऋकात ली माहे रमजान में निकालने को बेहतर समजते हैं.

सोने व आंढी का निसाभ: सोने या सोने के जेवरात का निसाब साडे सात तोला है.

यानी घससे कम सोने पर झकात इर्ज नही और यांटी साडे बापन तोला पर झकात इर्ज है. यांटी और सोने के निसाब में ढाघ डीसटी यानी यालीसवां हिस्सा इर्ज है.

तिज्जरती माल पर झकात: तिज्जरती माल पर ली यालीसवां हिस्सा झकात इर्ज. तिज्जरती माल पर झकात निकालने का तरीका यह है कि साल में आभिर में स्टोक जोड कर लेन-देन घटा करके बकिया में ढाघ डीसट के (२.५%) के लिहाज से उसकी कीमत जोड कर झकात दे दी जाये.

कम्पनियों के शेयर, निज्ज या सरकारी कम्पनियों पर झकात इर्ज नही. जब तक उनका नकद हिस्सा कब्जे में न आ जाये.

जमीनी पैदावर: जमीन की पैदावर अनाज, गल्ला, भेती की इसल पर ५५३ किलो गल्ला होने पर झकात इर्ज है, घससे कम पर झकात नही है.

अगर अनाज, इल पगैरह बारिश के पानी, तालाब या दरियाघ पानी से सिंचाघ हुघ तो दसवां हिस्सा और अगर सिंचाघ टयुबवेल या घन्सानी मेहनत से हुघ हो तो बीसवां हिस्सा झकात इर्ज है.

अवकाइ की आमदनी पर झकात: झकात की इर्जायत के लिये जाति भित्कियत शर्त है घसलिये जो माल और जायदाद रिक्काहे आम के लिये पकइ है मसलन मस्जिदें, यतीमखानों और मदरसों की पकइ की गघ जायदादों की आमदनी पर झकात इर्ज नही. अल्लाह तआला का इर्शाद है, गरीबों पर उस माल में से अर्घ करो जो हुमने तुमको दिया है. (अल बकर : २५४)

नकदी नोटों का हुकूम: साडे सात तोला सोने की कीमत के बराबर नोट हों तो उन पर ढाघ डीसट झकात पाजिब होगी और साडे बापन तोला की यांटी की कीमत के नोटों पर ढाघ डीसट झकात है.

जानवरों की झकात: जानवरों की ली झकात इर्ज है. अलबत्ता उन जानवरों पर झकात नही है जिन्से सपारी, आबपाशी (सिंचाघ) या बारबदारी (बोज ढोने) का काम लिया जाता हो. (अबूदाउद)

घिटों पर झकात: पांघ घिटों पर अक बकरी, दस से चौदाह पर दो बकरी, पन्डूह से उन्नीस पर तीन बकरीयां, बीस से चौबीस पर चार बकरीयां, पच्चीस से पैंतीस घिटों पर अक मादा बरया जो अक साल का हो युका हो पगैरह.

गाय बैंस पर झकात: गाय और बैंस में तीन पर झकात नही है. तीस से यालीस गाय, बैंस पर अक साल का बछडा, यालीस से साठ पर अक साल के दो बछडे, साठ से सत्तर पर दो साल का अक बछडा, अस्सी गाय, बैंस पर दो, दो साल के बछडे और नब्बे की तादाद पर तीन साल का बछडा झकात में देना जरूरी है.

भेड बकरियों पर झकात: अक से उनयालीस तक झकात इर्ज नही है. यालीस से अक सौ बीस भेड, बकरियों पर अक बकरी झकात इर्ज है. अक सौ घककीस से दो सौ भेड बकरियों पर दो बकरी और दो सौ अक से तीन सौ निनानवे तक तीन बकरियां और चार सौ से चार सौ निनानवे भेड बकरियों पर चार बकरियां और पांघ सौ से पांघ सौ निनानवे तक की तादाद पर पांघ बकरियां झकात देना इर्ज है.

ઝકાત કીન કીન લોગો કી દી જાએ

૦૧. ફકીર: યાની વહ મોહતાજ આદમી જો અપની રોજી-રોટી કમા નહીં સકતા બલકિ અપની જરૂરતોં મેં દૂસરો કા મોહતાજ હે.

૦૨. મિસ્કીન: વો કામ કરને વાલા શખ્સ જો મેહનત કરને કે બાવજૂદ અપની જરૂરીયાત પૂરી કરને મેં દૂસરો કા મોહતાજ હો.

૦૩. આમિલ: જો જકાત કે જમા કરને વ તકસીમ (બાંટને) કે ઇદારે મેં કિસી ખિદમત પર લગા હો.

૦૪. તાલિકે કલ્બ: વો લોગ જિજ્ઞે ઇસ્લામ પર કાયમ રહને ઓર સાબિત કદમી કે લિયે મદદ કી જાએ. ઝકાત કે માલ સે ઉનકી દિલજૂઈ કી જાએ.

૦૫. ગર્દન છુડાને મેં: યાની ગુલામ યા લોન્ડી કો ગુલામી સે આઝાદ કરાના ઓર મજલુમ કેદિયોં પર ખર્ચ કી જા સકતી હે, જો મુસલમાન હોને કે સબબ ઇસ્લામ દુશ્મન તાકતોં કે જુલ્મ કા શિકાર હોકર જેલ કાટ રહા હો, ઇસસે ઉનકો રિહા કરાને ઓર ઉનકે બચ્ચોં પર ખર્ચ કરને મેં.

૦૬. કર્ઝદાર: વહ કર્ઝદાર જો જાતી યા કોમી કર્ઝોં કે બોજ સે દબા હો.

૦૭. ફી સખીલિલ્લાહ: ઇસ્લામ કી બુલન્ટી ઓર હિફાજત કે લિયે રાહે ઇલાહી મેં જીહાદ કરને વાલોં પર ઓર મિલ્લી તથા રિફાહે આમ કે કામોં મેં ઝકાત ખર્ચ કી જાએ.

૦૮. ઇખ્ને સખીલ: મુસાફિર યાહે માલદાર હી કયૂં ન હો. સફર મેં અપની જરૂરીયાત કે લિયે મોહતાજ હો ગયા હો તો ઝકાત સે ઉસકી મદદ કી જા સકતી હે.

આખિર મેં અલ્લાહ સે દુઆ હેં કિ ઉસકી રહમત ઓર મગ્ફિરત વાલે મહીને મેં હમ સબકે ગુનાહ માફ કરે ઓર હમ સબકો જહન્નમ સે બચા કર જન્નત અતા કરે. આમીન!!

❦ રોગ ઓર કિરદાર ❦

જિસ રોગેદાર ને જુઠ બોલના ઓર જુઠ પર અમલ કરના નહીં છોડા તો અલ્લાહ કો ઉસકી જરૂરત નહીં કિ વો અપના ખાના ઓર પીના છોડ દે. (બુખારી)

ઇસ હદીસ સે માલૂમ હુવા કિ આદમી કી ઇબાદત કી કીમત ઉસ વકત હે જબકિ ઉસી કે સાથ વહ જુઠ બોલના ઓર જુઠ પર અમલ કરના છોડે હુવે હે. જો શખ્સ ઇસ તરહ ઇબાદત કરે કિ ઇબાદત કે સાથ વહ જુઠ બોલતા હો ઓર જુઠ પર અમલ કરતા હો તો ઉસકી ઇબાદત અલ્લાહ કે યહાં કાબિલે કુબૂલ નહીં ઠહરેગી. અલ્લાહ કો બિના જુઠ કા અમલ મતલૂબ હે, ન કિ વો અમલ જિસકે સાથ જુઠ શામિલ હો.

ઇસ હદીસ મેં દો લફઝ આએ હેં. એક જુઠ બોલના ઓર દૂસરા જુઠ પર અમલ કરના. જુઠ બોલને કા મતલબ હેં કિ આદમી હકીકત યા હક કો બયાન ન કરે. ખ્યાલ રહે કિ સિફ વહી શખ્સ જુઠા નહીં હે જો જાનબૂઝ કર જુઠ બોલતા હો યા જો પહલે સે તય કિયે હુએ જહન કે મુતાબિક જૂઠી બાત કહે. હદીસ કે મુતાબિક વો શખ્સ ભી જુઠા હે જો ખુદ ઇરાદા કરકે જુઠ ન બોલે, મગર વો એસી બાત કહે જો અમલન એક જૂઠી બાત હો. રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલેયહિ વસલ્લમ ને ફરમાયા આદમી કે જૂઠા હોને કે લિયે યહ બાત કાફી હે કિ વહ જો કુછ સુને ઉસી કો બયાન કરને લગે. (તિર્મિજી)

यानी सुनी हुँ जात को बगैर तहकीक दोहराना भी बूढ़ है.

बूढ़ पर अमल करना यह है कि आदमी बूढ़ को अपने अमल की बुनियाद बनाये. वह जुठा नारा भडा करके डोंम के उपर लीडरशिप हासील करे. वो अेक बेबुनियाद किस्सा घड कर उसके जरिये किसी बन्दा-अे-पुदा को बदनम करे. वो जुठी दस्तावेज तैयार करके किसी जायदाद को अपनी जायदाद बनाये. वह इर्ण तकरीर करके अपाम के दरम्यान मकबूलियत हासिल करे. वह भौबूदा दुनिया में बूढ़ की बुनियाद पर भडा होने की कोशिश करे, न कि सच की बुनियाद पर.

रोजा के बारे में बताया गया है कि उसका सवाब आम आमाल से जयादा है. उसकी पजह यह है कि रोजा में कुर्बानी का पहलू शामिल है.

अेक हदीस में बताया गया है, हजरत अबू हुदैरह (र.क.) कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, ईन्सान के हर अमल की नेकी दस गुना से सातसौ गुना तक बढ़ाई जाती है. अल्लाह तआला ने इरमाया, मगर रोजा का मामला अलग है. रोजा भेरे लिये है और मैं ही उसका बढ़ला दूंगा. बन्दा अपनी प्वाइशि को और अपने पाने को भेरे लिये छोडता है. रोजेदार के लिये दो पुशियां हैं. अेक पुशी रोजा ईकतार के वक्त और दूसरी पुशी अपने रण से मुलाकात के वक्त. (मुत्तकि अलैहि)

रोजे में जब लुभ-प्यास तडपाती है तो आदमी को अपनी बेयारगी याद आती है. वो और जयादा अल्लाह की तरफ लपकता है. वो कह उठता है कि पुदाया! मैंने तेरे अेक हुकम की तामील की मगर मैं तेरे बहुत से हुकमों की तामील न कर सका. मैंने अेक टिन का रोजा रना मगर मैं दूसरे बहोत से भौको पर रोजा न रन सका. यानी आम टिनों में परहेजगार न रह सका. तु अपनी रहमते पास से मुझे बप्स दे.

जब बन्दे की जुबान से ईस किस्म की दुआओं निकलती है तो अल्लाह की रहमत उसकी तरफ मुतपजजह होती (ध्यान देती) है. उसके बाद दस गुना और सात सौ गुना की हद को तोड कर उसके सवाब को बेहिसाब गुना तक बढ़ा दिया जाता है.

ईबादत का अमल दूनिया में किया जाता है और उसका अज्र आभिरत में मिलता है. मगर रोजा सबसे अलग हटकर अेक अेसी ईबादत है जिसमे अज्र का तजुर्बा ईसी दुनिया में करा दिया जाता है और आभिरत का बेअन्दाज सवाब उसका आभरी तजुर्बा.

❦❦❦ सडका-अे-कित्र ❦❦❦

कित्र के मअनी रोजा जोलने के हैं. यूंकि रोजे की हालत में कोई गलत या बेहुदा जात हो ही जाती है और कुछ गुनाह के काम भी जाने-अन्जाने में हो जाते हैं ईसलिये जब रमजान शरीफ मत्म हो जाये तो ईस रोजा जोलने की पुशी, अल्लाह तआला के शुक्रिया और अपने गुनाहों के कइरे में सडका प भैरात करने को सडकातुल कित्र भी इर्क है. (अबूदाउद, ईब्नेमाऊा)

यह सडका-अे-कित्र तमाम मुसलमानों पर इर्क है. याहे अमीर हो या गरीब,

मर्द हो या औरत, आजाद हो या गुलाम, छोटा हो या बडा. नबी सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने मक्का मुकर्रमा के गली-कूयों में अेक आदमी लेजकर यह अेलान कराया कि आगाह हो जाओ. सदकतुल क्त्र हर मुसलमान मर्द, औरत, आजाद, गुलाम, छोटे, बडे पर वाजिब है. (तिर्मिअ)

सदका की मिक्दार: सदका-अे-क्त्र हमेशा इस्तेमाल की जाने वाली आम पुराक का अेक साअ है. याहे गेहूं हो या चापल यानी जो अनाज रोजमर्दा इस्तेमाल किया जाता है उसका हर मेम्बर पर अेक साअ की मिक्दार (मात्रा) सदका-अे-क्त्र के लिये देना चाहिये. अेक साअ तकरीबन ढाई किलो के बराबर होता है.

यह सदका, इद की नमाज के लिये निकलने से पहले अदा करना जरूरी है. अगर इद से अेक दो दिन पहले अदा कर दिया जाये तो ली कोइ हर्ज नहीं. ज्याल रहे इद की नमाज के बाद सदका-अे-क्त्र अदा नहीं होगा.

══════ इंदुल क्त्र ══════

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर, वलिल्लाहिल हुम्द. इस्लामी शरीयत में रमजान का महीना रोजा का महीना है. और उसके बाद यकुम शव्वाल को इद का दिन करार दिया गया है. इद के दिन मुसलमान इस्लामी हुदू के अन्दर पुशी मनाते हैं. हालांकि यह सादा मअनों सिई पुशी का दिन नहीं है. यह अहले इस्लाम की जिन्दगी के लिये आगाज का दिन है.

इस किस्म की पुशी के दिन हर मुल्क व मिल्लत में पाये जाते हैं. जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, हर कोम के लिये इद और पुशी के दिन हैं और आज हम मुसलमानों की इद है. (बुजारी)

दूसरे लोग अपने त्योहारों को इन्सानियत के नाम से बाहर होकर शराबजोरी, हुडंग और दूसरे भेल-तमाशों में दिन गुजार देते हैं. लेकिन इस्लामी त्योहारों में न शराब, न हुडंग, न भेल-तमाशे हैं और न ही इन्सानियत सोज नजरे हैं बल्कि तवाजो, जाकसारी और जशियते इलाही के जलवें हैं. कुर्बानी, इसार व मसापात के मुजस्समे हैं, गमप्यारी के नमूने हैं. इत्तेहाद व इत्तेझाक की जती जागती अमली तस्वीर नजर आती हैं.

हजरत अनस (रअि.) इरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम जब हिजरत करके मदीना तय्यबा तशरीफ लाये तो मदीना के मुसलमानों को पुशी का दिन मनाते और भेल-कूद करते देखा तो इरमाया कि यह कैसा दिन है? उन लोगों ने कहा कि पुराने जमाने से हम लोग इदन दिनों में भेल-कूद करते पुशियां मनाते चले आये हैं. आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने इरमाया, अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिये इदन दिनों से बेहतर दो दिन मुकर्रर इरमा दिये हैं. तुम इदनमें पुशी मनाया करो, अेक इंदुल क्त्र और दूसरा इंदुल अजहा. (अबूदाउद)

रोज की सूरत में अल्लाह तआला ने अपने बन्दों का इम्तिहान लिया. जो लोग इस नाजुक इम्तिहान में पूरे उतरे, उनके लिये अल्लाह तआला ने इम्तिहान के महीने के इौरन बाद इन्आम का दिन रज दिया. रोज गोया मोमिन के लिये दुनिया की पुरमशककत जिन्दगी की मिसाल है और इद मोमिन के लिये आभिरत की

राहत व मुसर्त के दिन की तमसील. या यूँ कहिये कि रोज पाबन्दियों का मरहला है और एट आठाटी की मन्जिल.

रोज में सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक की सारी जिन्दगी तरह-तरह की पाबन्दियों में गुजरती है. यह करो और वह न करो, इस पकत जाओ और उस पकत न जाओ, कब सोओ और कब बिस्तर से उठ जाओ. गरज पूरा महीना इस तरह गुजारा जाता है. गोया कि आदमी की पूरी जिन्दगी दूसरे के कब्जे में है. आदमी को अपनी मर्ज पर नहीं बल्की दूसरे की मर्ज पर चलना है. इस तरह रोज आदमी को यह सबक देता है कि वह दुनिया में इस तरह रहे कि वह अपने आपको पूरी तरह अल्लाह की निगरानी में दिये हुअे हो, वह हर मामले में अल्लाह के हुकमों की पाबन्दी कर रहा हो.

इस तरह अेक पुरमशककत महीने के बाद एट का दिन आता है. एट के दिन अचानक तमाम अहकाम बदल जाते हैं. पहले रोज रजना इर्ज था अब रोज रजना हराम है. पहले लाजमी इर्जतों तक पर पाबन्दी लगी हुइ थी, अब कह दिया गया कि आठाटी से धुमो-किरो और भुशियां मनाओ. यहां तक की गरीबों के लिये साहिबे हैसियत लोगों पर सटका-अे-कित्र मुकर्र किया गया ताकि वह भी आज के दिन की भुशियों से महइम न रहें. यह गोया आभिरत की जिन्दगी की अेक तस्वीर है यह उस दिन को याद दिलाता है जब कि अल्लाह के सख्ये बन्दों पर से हर किस्म की पाबन्दियां उठा ली जाअेगी. वह अब्दी आराम और हमेशगी की भुशी की जन्नतों में दाभिल कर दिये जाअेगे. ज्वाह वो आज जाहिर निगाह वालों को कमजोर और बेकीमती ही क्यों न नजर आते हों.

नमाजे इंदुल कित्र: एँदेन की नमाज सुन्नते मोअकदा है. आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने हिजरत के बाद इसे जिन्दगी भर पढा और औरतों और मर्दों का इसमें शरीक होने का हुकम दिया. इंदुल कित्र के दिन इंदगाह के लिये निकलने से पहले कुछ जा लें. (जुजारी)

आप सल्लल्लाहु अलैयहि वसल्लम ने यह भी इरमाया कि एँदेन में अख्छे कपडे पहनें और भुशू लगाअें. (मुसनद अहमद)

एँदेन के लिये छोटे-बडे, औरत-मर्द, हाइग्न (हैजवाली) व ताहिरा (पाक) सभ को इंदगाह के लिये घर से निकलना खालिअे. हाइग्न (माइवारी वाली) औरत सिई दुआ में शरीक होगी और नमाज से अल्लाहिदा रहेगी. (जुजारी)

एँदेन की नमाज के लिये रास्ता षदल कर आना और जाना खालिअे. (जुजारी)

एँदेन की नमाज में कुल १२ तकबीरें भशनुन हैं. पहली रकअत में किरअत से पहले सात तकबीरें और दूसरी रकअत में किरअत से पहले पांच तकबीरें हैं. (इब्ने माजा, तिर्मिज)

एँदेन की नमाज से पहले या बाद में इंदगाह या मस्जिद में कोई नक़िल या सुन्नत नहीं पढनी खालिअे. (जुजारी, मुस्लिम, तिर्मिज)

इंद की नमाज का तरीका: एट की नमाज का तरीका यह है कि इंदगाह में सबसे पहले बगैर अजान व तकबीर के दो रकअत नमाज पढी जाअे. पहली रकअत में तकबीरें तहरीमा के बाद किरअत से पहले सात तकबीरें जाइए (जयादा)

કહી જાએ ઓર હર તકબીર કે સાથ ઇમામ ઓર મુકતદી સબ લોગ રક્યદેન કરે ઓર દૂસરી રકઅત મેં કિરઅત સે પહેલે પાંચ તકબીરેં કહી જાએ. (ઇબ્ને માઝા, તિર્મિઝી)

ઈદેન કે દિનોં મેં કસરત સે તકબીરે કહના સુન્નતે હૈ, તકબીર યહ હૈ, અલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર, લા ઇલાહા ઇલ્લાહુ, વલ્લાહુ અકબર અલ્લાહુ અકબર, વલિલ્લાહિલ હમ્દ.

હજરત સમરા (રઝિ.) ફરમાતી હૈં કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈયહિ વસલ્લમ ઈદેન મેં સૂરહ આલા ઓર સૂરહ ગાશિયા પઢા કરતે થે. (મુસનદ અહમદ)

ઔરતોં કા ઈદગાહ મેં આના વ નમાજ મેં શરીક હોના: ઈદેન મેં ઔરતોં કા ઈદગાહ જાકર નમાજ મેં શિરકત કરના જાઈજ હૈ.

હજરત ઉમ્મે અતયા (રઝિ.) ફરમાતી હૈં કે હમેં હુકમ દિયા ગયા કે હમ પર્દાનશી ઓર હાઈજા ઔરતોં કો ભી અપને સાથ ઈદગાહ લાએ. વહ મુસલમાનોં કી જમાઅત ઓર દુઆ મેં શરીક હોંગી. અલબતા હૈજ વાલી ઔરત મુસલ્લે સે અલગ બેહેંગી.

એક ઔરત ને રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈયહિ વસલ્લમ સે પૂછા અગર કિસી ઔરત કે પાસ ચાદર ન હો તો? આપ સલ્લલ્લાહુ અલૈયહિ વસલ્લમ ને ફરમાયા, ઉસકે સાથ વાલી ઔરત અપની ચાદર મેં છિપા કર ઉસકો ઈદગાહ તક લાએ. (બુખારી, મુસ્લિમ)

એક રિવાયત મેં આતા હૈ કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈયહિ વસલ્લમ ને ફરમાયા ઈદેન કી નમાજ મેં ઈદગાહ મેં તમામ મૌજૂદ મોમિન બન્દોં કી અલ્લાહુ દુઆ કબુલ ફરમાતા હૈ ઓર ઉનકે ગુનાહ બખ્શા દેતા હૈ. (મુતકિફ અલૈહિ)

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

સહેરી અને ઈફતાર સમય પત્રક રમઝાન હિજરી સન ૧૪૩૬, (૨૦૧૫)

રોઝા	તારીખ	દિન	સહેરી	ઈફતાર	રોઝા	તારીખ	દિન	સહેરી	ઈફતાર
01	19, JUN	શુક્ર	4-37	7-40	16	04, JULY	શનિ	4-41	7-42
02	20, JUN	શનિ	4-37	7-41	17	05, JULY	રવિ	4-41	7-42
03	21, JUN	રવિ	4-37	7-41	18	06, JULY	સોમ	4-42	7-42
04	22, JUN	સોમ	4-38	7-41	19	07, JULY	મંગળ	4-42	7-41
05	23, JUN	મંગળ	4-38	7-41	20	08, JULY	બુધ	4-43	7-41
06	24, JULY	બુધ	4-38	7-42	21	09, JULY	ગુરુ	4-43	7-41
07	25, JUN	ગુરુ	4-39	7-42	22	10, JULY	શુક્ર	4-44	7-41
08	26, JUN	શુક્ર	4-39	7-42	23	11, JULY	શનિ	4-44	7-41
09	27, JUN	શનિ	4-39	7-42	24	12, JULY	રવિ	4-45	7-41
10	28, JUN	રવિ	4-40	7-42	25	13, JULY	સોમ	4-46	7-41
11	29, JUN	સોમ	4-40	7-42	26	14, JULY	મંગળ	4-46	7-41
12	30, JUN	મંગળ	4-40	7-42	27	15, JULY	બુધ	4-47	7-41
13	01, JULY	બુધ	4-40	7-42	28	16, JULY	ગુરુ	4-48	7-41
14	02, JULY	ગુરુ	4-40	7-42	29	17, JULY	શુક્ર	4-48	7-41
15	03, JULY	શુક્ર	4-41	7-42	30	18, JULY	શનિ	4-49	7-40

આ ટાઈમ ટેબલ ભુજ માટે છે. બન્ની-પરછમમાં ૨ મીનીટ વધારવી. નખત્રાલામાં ૩ મીનીટ તેમજ અબડાસા અને લખપતમાં ૪ મીનીટ વધારવી. મુન્દ્રામાં ૨, અંજાર ૩, અને રાપર-ભયાઉમાં ૬-૬ મીનીટ ઓછી કરવી.